



2019-11-24

By Acharya Harish Chandra
for Arya Samaj Greater Houston



Quality of Life

We are conscious beings:

- Knowledge
- Action
- Experience – *Sukha-Duhkha, Shanti-Ashanti &*

Ananda

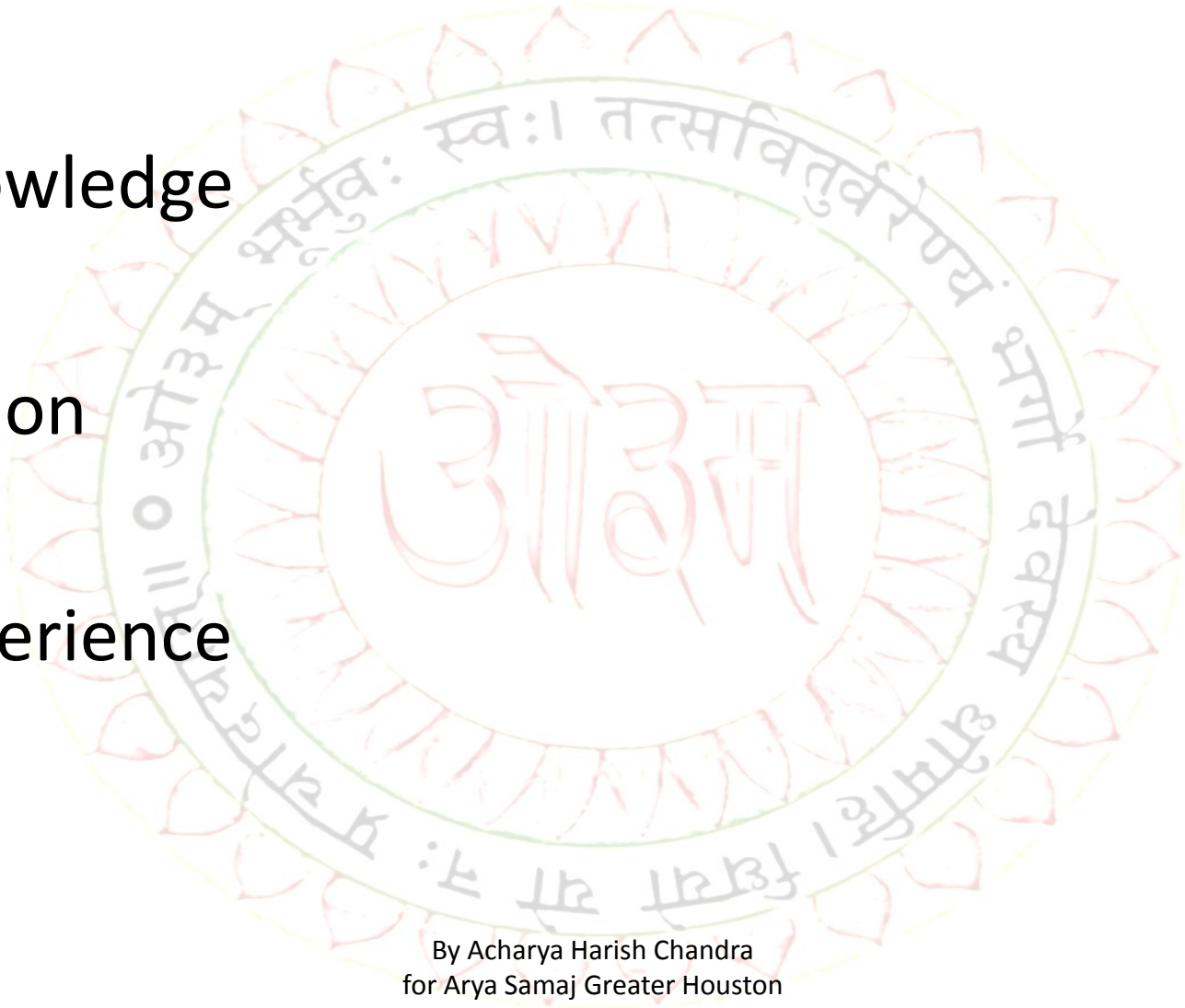
Jnyana, Karma & Bhoga



Ishvara is Conscious, too



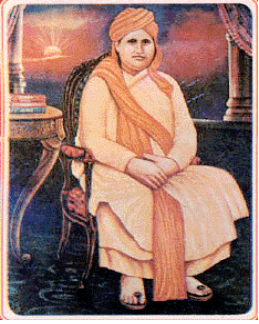
- Knowledge
- Action
- Experience





Upasana: Being with Him

- Meditation makes mind still and blank.
- Then we disconnect from mind.
- Then we connect to Him.



Upasana: What to Expect from Him

- Knowledge
- Action
- Experience

Jnyana, Karma, Upasana & Vijnyana



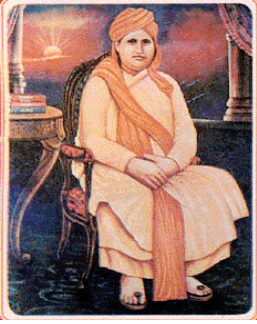
Role of Satya & Ahimsa

What is their role in the scheme to upgrade
quality of life via *Upasana*



An Overview of Ten Principles of Arya Samaj

- १ सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदिमूल परमेश्वर है।
- २ ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालू, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
- ३ वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
- ४ सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।



An Overview of Ten Principles of Arya Samaj

- ५ सब काम धर्मनुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
- ६ संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
- ७ सब से प्रीतिपूर्वक धर्मनुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।
- ८ अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
- ९ प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए। किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
- १० सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।



Satya Bears Both Connotation

Ten Principles of Arya Samaj

- Knowledge – 1, 3, 4
- Action – 5



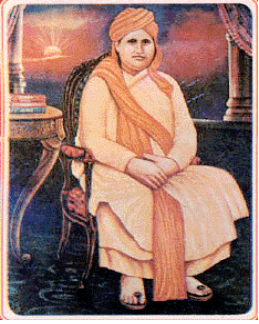
Know the Truth

सत्य की रक्षा असत्य का नाश करें
सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते ।
तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयस्तदित्सोमोऽवति हन्त्यासत् ॥ १२ ॥

पदार्थ-चिकितुषे=जाननेवाले जनाय=मनुष्य के लिये सत् च असत् च=सत्य और असत्य दोनों सुविज्ञानं=अच्छी प्रकार जानने योग्य हैं, क्योंकि सत् च असत् च वचसी=सत्य और असत्य दोनों वचन पस्पृधाते=परस्पर स्पर्द्धा करते हैं। दोनों विरोधी होते हैं तयोः=उन दोनों में यत् सत्यं=जो सत्य है और यतरत् ऋजीयः=जो अधिक ऋजु, धर्मानुकूल है तद् इत्=उसकी ही, सोमः=उत्तम शासक विद्वान् अवति=रक्षा करता है और असत् हन्ति=असत् को विनष्ट करता है।

Pandit Lekhram Vedic Mission (302 of 881)

भावार्थ-विद्वान् जन अपने विवेक से सत्य और असत्य का निर्णय अच्छी प्रकार से करें।



Manu: Na Hi Satyat Paro Dharmah



We are conscious beings:

- Knowledge
- Experience
- Action



Ahimsa: Not to Hurt

Patanjali's Yama: in the domain of Action

- *Ahimsa*
- *Satya*
- *Asteya*
- *Brahmacharya*
- *Aparigraha*

Ahimsa Param Dharmah

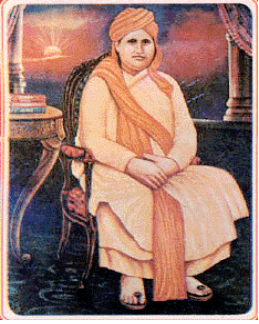


Question Arises: What is Our Dharma

Manu: Na Hi Satyat Paro Dharmah

OR

Patanjali: Ahimsa Param Dharmah



Two Instances

Satya: How to react when enemy soldiers attack

Ahimsa: Butcher running after a cow



Summary

- Knowledge must be guided by Truth
- Action must follow Satya or Ahimsa
- Knowledge & Action must be superior so as to succeed in *Upasana*